वर्ष1 2009 अंक 3

विज्ञान में युवा नेतृत्व प्रशिक्षण

संस्थान में सी.एस.आई.आर. की विज्ञान में युवा नेतृत्व योजना (सी.पी.वाई.एल.एस.) के अन्तर्गत दो दिवसीय कार्यक्रम (21–22 दिसम्बर, 2009) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञान के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना है। इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न भागों से सी.बी.एस.सी, आई.सी.एस.ई. तथा हि.प्र. शिक्षा बोर्ड के दसवीं कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले 56 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने प्रदेश के विभिन्न भागों से आये हुए प्रतिभावान विद्यार्थियों तथा उनके अविभावकों का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान तथा सी.एस.आई.आर. के विभिन्न संस्थानों के कार्यक्षेत्र का विवरण प्रस्तुत किया तथा प्रमुख गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभ उठाएं। साथ ही उन्होंने बच्चों को विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों तथा नवोन्मेष शोध के लिए भी प्रेरित किया।

इस दौरान इन विद्यार्थियों को संस्थान की विभिन्न शोध एवं विकास कार्यक्रमों से परिचय कराया गया तथा प्रक्षेत्र की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। समापन सत्र में प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम के बारे में अपने–अपने विचार रखे।

डा. परमवीर सिंह आहूजा, निदेशक ने सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र से सम्मानित भी किया।

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर–हिमाचल प्रदेश

महामहिम दलाई लामा ने संस्थान में 25 नवम्बर, 2009 को नेत्र विशेषज्ञों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया।

पुष्प उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन

संस्थान में 'व्यावसायिक कट फ्लावर पुष्प उत्पादन की तकनीक पर दो दिवसीय (दिनांक 17–18 दिसम्बर, 2009) प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आई.एच.बी.टी. के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने आए हुए प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए आशा प्रकट की कि यह कार्यक्रम पुष्प उत्पादकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत लिलियम, एल्स्ट्रोमेरिया, कार्नेशन, जरबेरा, गुलदाउदी, गेंदा एवं ग्लैडियोलस पुष्पों की खेती की तकनीक एवं रखरखावपर विस्तार से चर्चा की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा से 28, लाहौल व स्पीति से 4, सोलन से 2 तथा मंडी से 3, चम्बा से 10, ऊना व कुल्लू से 4 प्रतिभागी शामिल हुए। भारतीय स्टेट बैंक, कृषि विश्वविद्यालय शाखा, पालमपुर के मुख्य प्रबन्धक ने व्यावसायिक पुष्प उत्पादन के लिए सॉफ्ट लोन स्कीम की जानकारी दी। डा. रूप किशोर धीमान, बागवानी विकास अधिकारी, धर्मशाला ने बागवानी तकनीकी मिशन के बारे में जानकारी दी तथा उम्मीद प्रकट की कि जो किसान पुष्प खेती कर रहे हैं तथा जो करने के इच्छुक हैं वे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों व पुष्प

उत्पादकों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाएंगे। लाहौल के उत्पादक नये तौर पर इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए हैं तथा आशा है कि आने वाले समय में वहां पर पुष्प विशेषकर लिलियम की, खेती का क्षेत्रफल बहुत बढ़ेगा। इस कार्यक्रम का आयोजन सी.एस.आई.आर. के ग्रामीण विकास कार्यक्रम तथा तकीनीकी नवोन्मेष एवं प्रबन्धन (वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग, भारत सरकार) के अन्तर्गत किया गया जिसका नेतृत्व आई. एच.बी.टी. के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा कर रहे हैं।

वानिकी पद्धति में ककुरकुमा एवं हिडीचियम की खेती पर प्रशिक्षण

संस्थान में 21–22 अक्तूबर 2009 के दौरान चम्बा और कांगड़ा जिले के किसानों तथा वन विभाग के अधिकारियों को ''वानिकी/कृषि वानिकी पद्धति में *करकुमा* एवं *हिडीचियम* की खेती'' हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सी.एस.आई.आर द्वारा वित्तपोषित इस परियोजना के अन्तर्गत अनूकूल वन खंण्डों में *करकुमा* एवं *हिडीचियम* की साझी वन प्रबंधन योजना के समरूप खेती पर विस्तार में प्रशिक्षण दिया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने प्रतिभागियों को बताया कि यह संस्थान साझा वन प्रबन्ध के अन्तर्गत कुछ और बहुमूल्य फसलों के लिए किसानों को प्रशिक्षित करेगा। इस प्रशिक्षण में चुराह, भरमौर, बीड़ एवं सलूनी के वन मंडलों के वन रक्षकों, वन अधिकारियों, किसानों एवं महिला मण्डल प्रतिनिधियों सहित 8 लोगों ने भाग लिया। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण में संस्थान के विशेषज्ञों ने करकुमा (हिमहल्दी) एवं हिडीचियम (हिमकचरी) के अतिरिक्त अन्य औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती तकनीक की जानकारी के साथ प्रक्षेत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया। इस प्रशिक्षण के दौरान हिडीचियम के उत्पाद के विपणन की संभावनाओं पर भी चर्चा हुई तथा साझा वन प्रबन्ध द्वारा सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु संस्थागत प्रयास पर बल दिया गया। सभी प्रशि क्षार्थियों ने बताया कि वे यहां से प्राप्त ज्ञान का उपयोग अपने–अपने क्षेत्रों में जाकर करेंगे तथा अन्य इच्छुक लोगों को भी प्रेरित करेंगे।

जर्मन प्रतिनिधिमण्डल

संस्थान में 10 दिसम्बर 2009 को जर्मनी–भारत सवाद बैठक के अन्तर्गत ''जीवविज्ञान एवं दवाइयों में तथा पादप निष्पादप के इष्टतमीकरण में प्रोटीन का महत्व'' विषय पर चर्चा की।

Research Papers

Adhikari BS, **Uniyal SK** and Rawat GS. 2009. Vegetation structure and community patterns of Tehri dam Submergence zone, Uttarakhand, India. *EurAsian Journal of Biosciences* 3: 40-49.

Bandna, Jaitak V, Kaul VK and **Singh B**. 2009. Synthesis of novel acetates of caryophyllene under solvent-free Lewis acid catalysis. *Natural Product Research* 23(15): 1445-1450.

Chaudhary A, Kaur P, Singh B and **Pathania V** (2009) Chemical composition of hydrodistilled and Solvent Volatiles Extracted from Woodchips of Himalayan Cedrus: *Cedrus deodara* (Roxb.) Loud. *Natural Product Communication* (4)9: 1257-1260.

Gopichand, **Singh RD**, **Amit Kumar**, **Meena Ramjee Lal** and **Ahuja PS**. 2009. Current status of *Ginkgo biloba* L. in India. *The Indian Forester* 135 (11): 1588-1593.

Gulati A, Rajkumar S, Karthigeyan S, Sud RK, Vijayan D, Thomas J, Rajkumar R, Das SC, Tamuly P, Hazarika M and **Ahuja PS.** 2009. Catechin and catechin fractions as biochemical markers to study the diversity of Indian tea (*Camellia sinensis* (L.) O. KUNTZE) Germplasm. *Chemistry & Biodiversity* 6(7): 1042-1052.

Kaul K, Karthigeyan S, Dhyani D, Kaur N, Sharma RK and **Ahuja PS**. 2009. Morphological and molecular analyses of *Rosa damascena* x *R. bourboniana* interspecific hybrids. *Scientia Horticulturae* 122(2): 258-263.

Kharakwal Amit, **Singh Dharam**, **S. Rajkumar** and **Ahuja PS**. 2008 (2009). Genetic variation within and among the populations of *Podophyllum hexandrum* Royle. (Podophyllaceae) in western Himalaya. *Plant Genetic Resources Newsletter* 156: 67-71.

Kumar Amit and **Uniyal SK**. 2008. Distribution pattern of *Dendrocalamus strictus* in Kangra district of Himachal Pradesh, India. *Journal of Bamboo and Rattan* 7(3&4): 211-217.

Kaur P, Chaudhary A, Singh B and **Gopichand.** .2009. Optimization of extraction technique and validation of developed RP-HPLC-ELSD method for determination of terpene trilactones in *Ginkgo biloba* leaves. *Journal of Pharmaceutical and Biomedical Analysis* 50(5): 1060-1064.

Koul O, Singh G, Singh R, Walia S and **Kaul VK.** 2009. Comparative bioefficacy of biorational ethylene glycol diesters and sucrose octanoate against *Lipaphis erysimi* (Homoptera: Aphididae) *Journal of Applied Entomology* 133(9-10): 682-688.

Om Parkash, **Jaryan Vikrant**, **Sharma Varun**, **Vats SK**, **Uniyal SK**, **Brij Lal**, **Singh RD** and Guleria SK. 2009. *Soliva anthemifolia* (Juss.) R. Br. (Asteraceae) - an addition to the flora of Himachal Pradesh. *Journal of Economic & Taxonomic Botany* 33(4): 829-831.

Sharma N, Ghosh P, Sharma UK, Sood S, Sinha AK and **Gulati A.** 2009. Microwave-Assisted Efficient Extraction and Stability of Juglone in Different Solvents from Juglans regia: Quantification of Six Phenolic Constituents by Validated RP-HPLC and Evaluation of Antimicrobial Activity. *Analytical Letters* 42(16): 2592-2609.

Sharma U, Saini R, Kumar BN and **Singh B.** 2009. Steroidal Saponins from Asparagus racemosus. **Chemical and Pharmaceutical Bulletin** 57(8): 890 -893.

Sharma UK, Sharma N, Sinha AK, Kumar N and **Gupta AP.** 2009. Ultrafast UPLC-ESI-MS and HPLC with monolithic column for determination of principal flavor compounds in vanilla pods. *Journal of Separation Science* 32(20): 3425-3431.

Sharma UK, Sharma N, Kumar R, Kumar R and **Sinha AK**. 2009. Biocatalytic promiscuity of lipase in chemoselective oxidation of aryl alcohols/ acetates: A unique synergism of CAL-B and [hmim] Br for-the metal-free H_2O_2 Activation. *Organic Letters*, 11(21): 4846-4848.

Sharma Varun and **Uniyal SK**. 2009. *Aeginetia indica* L. – A new record to the Flora of Himachal

Pradesh. *Indian Journal of Forestry* 32(1): 127-130.

Yadav SK. 2009. Computational structural analysis and kinetic studies of a cytosolic glutamine synthetase from *Camellia sinensis* (L.) O. Kuntze. *Protein Journal* 28 (9-10): 428-434.

Yadav SK and **Mohanpuria P**. 2009. Responses of *Camellia sinensis* cultivars to Cu and Al stress. *Biologia Plantarum* 53(4): 737-740

Uniyal, Anjali and **Uniyal SK**. 2008. Distribution, status and conservation of *Picrorhiza kurrooa* in the Himalayan region. *Envis Bulletin (Wildlife and Protected Areas)* 11 (1): 55-61.

Walia Y, Kumar Y, Rana T, Bhardwaj P, Ram R, Das Thakur P, Sharma U, Hallan V and **Zaidi, A. A**. 2009. Molecular characterization and variability analysis of Apple scar skin viroid in India. *Journals of General Plant Pathology* 75(4): 307-311.

सिंह आर. डी., गोपीचंद, मीणा रामजी लाल, बृज लाल तथा संजय कुमार. 2009. औषध वनस्पतियों का गृहीकरण एवं कृषि. *विज्ञान प्रगति* अक्तूबर: 45–48.

भेषज पौधों का डाटाबेस

राष्ट्रीय औषध पौधा बोर्ड द्वारा प्रायोजित "भारतीय हिमालय क्षेत्र के भेषज पौधों का डाटाबेस निर्माण" परियोजना के अन्तर्गत हिमालय जैवसम्पदा प्रौद्योगिकी संस्थान के समन्वयन द्वारा नार्थ ईस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, जोरहट, असम; इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्टिग्रेटिव मेडिसिन, जम्मू; तथा नार्थ–ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय समेत चार संस्थानों ने 1570 भेषज पौधों का डाटाबेस तैयार कर लिया गया है। यह डाटाबेस राष्ट्रीय औषध पौधा बोर्ड के वेब पोर्टल पर उपलब्ध है।

प्रधान मुख्य अरण्यपाल का संस्थान में भ्रमण

संस्थान में 5 दिसम्बर 2009 को हिमाचल प्रदेश के प्रधान मुख्य अरण्यपाल तथा वरिष्ठ वन अधिकारियों के भ्रमण के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों तथा वन अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में संस्थान की जैवसम्पदा का सर्वेक्षण एवं

विश्लेषण, वन संरक्षण, साझा वन प्रबंधन, पर्यावरण परिवर्तन तथा वन सम्पदा, डाटाबेस विकास आदि से सम्बन्धित शोध व विकास गतिविधियों पर व्यापक चर्चा हुई। इस अवसर पर वन विभाग एवं संस्थान की एक साझी परियोजना की संभावना पर भी चर्चा की गयी।

संभाषण

आहूजा पी.एस. ने 29 अक्टूबर, 2009 को शिमला में हिमालय क्षेत्र के मुख्यमंत्रियों की बैठक में "जलवायु परिवर्तन और शोध संस्थानों की भूमिका" पर संभाषण दिया।

आहूजा पी.एस. ने 3 नवम्बर 2009 को गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में ''परिस्थितिकी, जैवविविधता और सतत विकास'' विषय पर मुख्य संभाषण दिया।

आहूजा पी.एस. ने 11 नवम्बर 2009 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के टिम (TIM) कार्यक्रम के अन्तर्गत शिमला के होटल होलीडे होम में आयोजित कार्यशाला में ''तकनीकी नवोन्मेष तथा आर्थिक उत्थान'' विषय पर संभाषण दिया।

आहूजा पी.एस. ने 19–21 नवम्बर 2009 को पीटरहॉफ स्टेट गेस्ट हाउस, शिमला में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में ''Forestry solutions: Strategies for mitigation and adaption of the impacts of climate change in western Himalayan mountain states'' विषय पर संभाषण दिया।

आहूजा पी.एस. ने 28–30 दिसम्बर 2009 को Kuvempu University, Shankaraghatta में Implications of diversity analysis reproductive biology and genreric modification in some economic plants विषय पर संभाषण दिया।

स्मारक व्याख्यानमाला

डा. हंस राज नेगी स्मारक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत दिनांक 13 नवम्बर 2009 को डा. विजय कुमार कौल ने ''पादप संसाधनों से सुगंध संग्रह तैयारी पर संभाषण दिया।

रजत जयंती व्याख्यान श्रृंखला

संस्थान की रजत जयंती व्याख्यानमाला के अन्तर्गत निम्नलिखित वैज्ञानिकों ने अपने शोध कार्यों पर प्रस्तुति दी।

दिनांक 05.10.2009 डा. अनिल सूद
06.11.2009 डा. आर. डी. सिंह

विदेश यात्रा

गुलाटी अरविन्द ने 2–4 दिसम्बर 2009 को लिसबन (पुर्तगाल) में आयोजित IIIrd International Conference on Environmental, Industrial and Applied Microbiology (BioMicroWorld2009) में भाग लिया।

समझौता ज्ञापन

दिनांक 23 नवम्बर 2009 को महिन्द्रा शुभलाभ, मोहाली के साथ उतक संवर्धन विधि से व्याधिरहित आलू के पौधे तैयार करने के संबन्ध में ।

दिनांक 12 दिसम्बर 2009 को उत्तराखंड बांस और रेसा विकास बोर्ड, देहरादून के साथ संस्थान में अत्याधुनिक बांस संग्रहालय–सह–कार्यकेन्द्र की स्थापना हेतु।

दिनांक 15 दिसम्बर 2009 को राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान केन्द्र, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली के साथ संश्लेषित यौगिको की मलेरियारोधी गतिविधियों के मूल्यांकन हेतु।

दूरदर्शन वार्ता

डा. बिक्रम सिंह ने 20 नवम्बर 2009 को "एसिन प्राप्त करने हेतु बनखोड़ का उपयोग" पर वार्ता प्रस्तुत की।

डा. आर. के. सूद ने 22 दिसम्बर 2009 को "चाय बागानों में फसल की उत्पादकता एवं गुणवत्ता बढ़ाने हेतु मृदा परीक्षण का महत्व" पर वार्ता प्रस्तुत की।

बैठक में प्रतिभागिता

उनियाल संजय कुमार ने "उच्च हिमालय फोरम का द्वितीय वार्षिक सम्मेलन" में प्रतिभागिता की, 9 अक्तूबर 2009, नई दिल्ली।

बृज लाल ने वृहत पारम्परिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी की टास्क फोर्स बैठक में प्रतिभागिता की, 28 अक्तूबर 2009, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

आहूजा पी.एस., संजय कुमार तथा वत्स एस.के. ने "भारतीय हिमालय: हिमनदियाँ, जलवायु परिवर्तन तथा जीविकोपार्जन" विषय पर हिमालयी मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में प्रतिभागिता की, 29–30 अक्तूबर 2009, शिमला।

सिंह आर.डी. ने पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, हिमाचल प्रदेश की "हिमाचल प्रदेश में ग्रामीण उत्थान हेतु भेषज एवं सगंध पौधों की खेती, मूल्य–वर्धन तथा विपणन" परियोजना की कार्यकारी समिति की बैठक में प्रतिभागिता की, 3 नवम्बर 2009, सचिवालय, शिमला।

आहूजा पी.एस., सिंह आर.डी. तथा उनियाल संजय कुमार ने "भारतीय हिमालय क्षेत्र के भेषज पौधों का डाटाबेस निर्माण" परियोजना की तीसरी सामूहिक बैठक में प्रतिभागिता की, 24 नवम्बर 2009, विज्ञान केन्द्र (सी.एस.आई.आर), नई दिल्ली।

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

संस्थान में दिनांक 3–6 नवम्बर, 2009 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह–2009 का आयोजन किया गया। आयोजित किए गए कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है:

दिनांक	कार्यक्रम / वक्ता
3.11.2009	सतर्कता जागरुकता शपथ

4.11.2009 को इ–पेमेंट पर प्रबन्धक, एस.बी.आई. कृषि विश्वविद्यालय शाखा, पालमपुर ने जानकारी दी।

5.11.2009 को सतर्कता–विविध पहलु पर श्री डी. एन. बक्शी, परियोजना सतर्कता अधिकारी, पार्वती जल विद्युत परियोजना, एन.एच.पी.सी., कुल्लू ने बताया।

6.11.2009 समापन समारोह संभाषण

विषय	वक्ता
वैज्ञानिक ऑडिट	डा. अपर्णा मैत्रा,
प्रशासन संबन्धी सतर्कता	श्री बी. के सिंह,
वित्त संबन्धी सतर्कता	श्री ए.के.राय,
क्रय संबन्धी सतर्कता	श्री वी.के जुलका,
अध्यक्षीय संबोधन	डा. अनिल सूद

कार्यशाला

प्रौद्योगिकी एवं नवोन्मेष प्रबन्धन के अन्तर्गत शिमला में 11–12 दिसम्बर, 2009 को दो दिवसीय कार्यशाला

का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों से 31 प्रतिनिधियों ने प्रतिभागिता की। इस कार्यशाला मे आई.पी.आर. और नवोन्मेष के प्रबन्धन के बारे में जानकारी दी गई।

संस्थान में आने वाले महत्वपूर्ण अतिथि

अर्जेटाइना के डा. केरीना रियाज ने दिनांक 7–20 अक्टूबर, 2009 तक ।

श्री राकेश गोयल, मुख्य इंजीनियर (सिविल), नेशनल हाइड्रो पावर कार्पोरेशन, कुल्लू 14 दिसम्बर 2009

संस्थान की प्रदर्शनी

संस्थान के प्रौद्योगिकी नवोन्मेष प्रबन्धन केन्द्र (टिम) के अन्तर्गत 4–5 अक्टूबर, 2009 को स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के मैदान में आयाजित दो

दिवसीय आर्मी मेले में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सेवानिवृत आर्मी कर्मियों एवं अन्य लोगों ने उक्त प्रदर्शनी में औषधीय एवं पुष्प फसलों की खेती सम्बन्धी जिज्ञासाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की।

संस्थान ने बिलासपुर हि.प्र. में राज्य स्तरीय छात्र विज्ञान कांग्रेस में 24.11.2009 से 27.11.2009 तक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

स्थानान्तरण

श्री बिजय कुमार सिंह, प्रशासन अधिकारी परिषद् मुख्यालय में स्थानान्तरित हुए तथा संस्था से 1 दिसम्बर को कार्यभार हुए।

कार्यभार ग्रहण

श्री राम कृष्ण धर ने सीमैप, लखनऊ स्थानान्तरण पर 22 नवम्बर 2009 को संस्थान में प्रशासन अधिकारी के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

नव नियुक्ति

सुश्री जसबीर कौर ने 1 अक्टूबर 2009 को तकनीशियन (पुस्तकालय) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

परिसर की जैवसंपदा

बाँस

बाँस–प्रकृति की अद्‌भुत देन

मानवीय सभ्यता के विकास के साथ बाँस का बहुत गहरा संबन्ध रहा है और बाँस ने हमारे जीवन को कई प्रकार से प्रभावित किया है। बाँस तेजी से बढ़ने और बहुआयामी उपायों के अतिरिक्त, जलवायु की स्थिरता, भूमि व जल संरक्षण और ग्राम स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाने के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है। बाँसों के बहुआयामी उपयोगों को देखते हुए इन्हे 'हरा सोना' कहा जाता है। अभी तक बाँसों के लगभग 1500 प्रयोगों का उल्लेख किया जाता है। पूरे विश्व में करोड़ों लोगों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर बाँस से संबन्ध है तथा भारत में यह संख्या लगभग 2 करोड़ 30 लाख है। प्रतिवर्ष 50,000 करोड़ रुपये के बाँस के उत्पाद बेचे जाते हैं। उत्तम किस्मों के बाँसों को चुनकर उन्हें अनेक प्रकार से प्रबंधित किया जाए ताकि देश की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

बाँस के उत्पादन में विश्व भर में भारत दूसरे स्थान पर है जिसमें से 40–60 लाख टन बाँस प्रतिवर्ष जंगलों से काट लिया जाता है, जिसमें से 19 लाख टन केवल कागज उद्योग में लुगदी बनाने में ही प्रयुक्त हो जाता है। इस समय भारत में 1 करोड़ हैक्टेयर क्षेत्र में बाँस है जो कि कुल वन क्षेत्र का 13 प्रतिशत है। अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा और पश्चिमी बंगाल अत्याधिक बाँस उगाने वाले राज्य हैं। बाँस को विभिन्न प्रकार से लगाया जा सकता है। बाँस के संदर्भ में यह कहना अनुचित न होगा कि आज की मांग को ध्यान में रखकर बाँस प्रवर्धन की सभी विधियों का प्रयोग किया जाए ताकि उपयुक्त मात्रा में बाँस की पौध तैयार कर देश की बंजर या खाली जमीन का सदुपयोग किया जा सके तथा ग्रामीण स्तर पर रोजगार के अवसर प्रदान किया जा सके।

संस्थान ने बाँसों की उन्नत किस्मों का चयन कर उनका प्रवर्धन करने की विधियाँ विकसित की हैं तथा वन विभाग और किसानों को नियमित रूप से प्रशिक्षित भी किया जाता है। यही नहीं, बाँसों के खाद्य पदार्थ के रूप में प्रस्तुत करने हेतु नई प्रजातियों को प्रविष्ट करके देश के विभिन्न भागों में वितरित करते हैं तथा लोगों को इस प्राकृतिक स्रोत से परिचित कराने के लिए प्रदर्शनी एवं संभाषणों का प्रयोग बखूबी किया जा रहा है।

प्रकाशकः
डा. परमवीर सिंह आहूजा
निदेशक
आई.एच.बी.टी., पालमपुर
दूरभाषः 01894–230411 फैक्सः 01894–230433
E-mail : director@ihbt.res.in
Website : http://www.ihbt.res.in

संकलन एवं संपादन :
डा. आर. डी. सिंह, विज्ञानी
श्री मुख्त्यार सिंह, पुस्तकालय अधिकारी एवं
श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक